

दशमः पाठः

# प्रतीक्षा

आधुनिक उड़िया लेखकों में श्रीरमाकान्त रथ का मूर्धन्य स्थान है। आपकी अनेक किवताएँ देश-विदेश की भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। संस्कृत भाषा में इनकी किवताओं का अनुवाद "श्रीराधा" के रूप में प्रकाशित हुआ है। इसके अनुवादक श्रीगोविन्दचन्द्र उद्गाता हैं। गीतगोविन्द की भाँति इसमें भी राधा एवं कृष्ण के सख्यभाव को रहस्यवाद की छाया में बहुत सुन्दर प्रकार से वर्णित किया गया है। राधा कृष्ण की प्रतीक्षा करती है और अत्यन्त व्याकुल हो जाती है। दिन-रात प्रतीक्षा में उसे विभिन्न रूपों की जो छिव दिखाई देती है, वह वस्तुत: अनिर्वचनीय है। उनके रूप का साकल्येन वर्णन करना असम्भव ही है। कण-कण में विद्यमान वह उपास्य, भक्त को विभिन्न रूपों में दिखाई देता है – यह तथ्य बड़े ही प्रतीकात्मक प्रकार से इस गीत में प्रतिपादित किया गया है।



प्रतीक्षा 83

प्रतीक्षेऽहं तव कृते दिनं दिनम् रजनीं रजनीं च न जातु दर्शनं ददासि मे, किं तावन्मे सा प्रतीक्षा? तस्यां मे चाञ्चल्यपरिपूरितायां प्रतीक्षायाम् कृत्र वा विद्यते स्थानम् अवस्थानाय तव पूर्णतया?

यदा वा दृश्यते, रूपस्यार्धाधिकं तदा तव लोचनविषयातीतं भूत्वा तिष्ठति। यत् किञ्चिदपि दृश्यते तथापि न भजित स्पष्टरूपताम् यतस्तत् समाच्छन्नमेव भवित अशान्ति-प्रसूतैर्मे स्मृति-दृश्याभिलाषैर्बहुविधै:,

अथ वा दृश्यते स्फुरज्जलवक्षसि छायेव पादपानामुपकूलवर्तिनाम्। दृष्टे सित कस्यचिन्नाम्नो रूपे स्थाने तस्योपजायमानं दृश्यते अन्यच्च न किञ्चन रूपं नामान्तर-चिह्नितम् एकमेव रूपं भूत्वा।

हन्त नाहं भाजनमभवमेतावताऽपि कालेन एकमेव रूपं कर्तुमात्मनः पूर्णतया।

कियान् पुनः कालो वर्तते शेषः यदहं चिन्तयिष्यामि यदिस त्वं तद्रूपतयाऽऽगत्य एकदा समुपस्थास्यसे मदन्तिके निर्जनवेलायां मे परमायुषः? 84 भास्वती

### शब्दार्थाः टिपण्यश्च

प्रतीक्षे - प्रतीक्षा करती हूँ।

रजनीम् - रात्रिम्, रजनी, द्वि.वि.ए.व., रात को।

जातु - अव्ययम्, कभी भी।

ददासि - यच्छिस, दा, लट्, म.पू.एक व., देते हो।

प्रतीक्षायाम् - प्रतीक्षा शब्द, सप्तमी वि. ए. व. (स्त्री.), प्रतीक्षा में।

विद्यते - है (विद्यमान है)।

**अवस्थानाय** - अव + स्था + ल्युट् (अन), चतु. वि.एक.व., ठहरने के

लिए।

**समाच्छन्नम्** - सम् + आ + छद् + क्त, ढका हुआ। **प्रस्तैः** - प्र + स्र + क्त, तृ.वि.बहु व., उत्पन्नों से।

अन्तिके – समीपे, समीप।

वेलायाम् - वेला, स.वि.ए.व., (स्त्री.), समय में।

# अभ्यासः

#### 1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) का प्रतीक्षां करोति?
- (ख) प्रतीक्षा कीदृशी अस्ति?
- (ग) क: दर्शनं न ददाति?
- (घ) 'प्रतीक्षा' पाठ: कस्मात् ग्रन्थात् अनूदित:?

#### 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) अहं कथं प्रतीक्षे?
- (ख) राधा पूर्णतया आत्मन: किं कर्तु वाञ्छति?
- (ग) एकदा कुत्र समुपस्थास्यसे?

प्रतीक्षा 85

- (घ) एकमेव रूपं भूत्वा कथं चिह्नितम्?
- (ङ) छायेव स: क्त्र दृश्यते?
- (च) यदा वा दृश्यते तदा कथं भूत्वा तिष्ठति?

#### 3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) तथापि न भजति स्पष्टरूपताम्।
- (ख) अथवा दृश्यते स्फुरज्जलवक्षसि।
- (ग) स्थाने तस्य उपजायमानं दृश्यते।
- (घ) निर्जनवेलायां मदन्तिके समुपस्थास्यसे।
- (ङ) पुन: कालो वर्तते शेष:।

#### 4. विशेषण-विशेष्यपदानां समुचितं मेलनं कुरुत-

चाञ्चल्यपूरितायाम् कालः

उपकूलवर्तिनाम् रूपम्

नामान्तरचिह्नितम् दुश्याभिलाषै:

शेष: प्रतीक्षायाम्

बहुविधै: पादपानाम्

## 5. अधोलिखितेषु सन्धिच्छेदं कुरुत-

अर्धाधिकम्, छायेव, तस्योपजायमानम्, अन्यच्च, कस्यचिन्नाम्नः, तद्रूपतया, प्रतीक्षेऽहम्, तावन्मे।

#### 6. अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

भूत्वा, स्थाने, दूश्यते, विद्यते, प्रतीक्षा, दर्शनम्, अन्तिके।

#### 7. अधोलिखितानां पदपरिचयो देय:-

ददासि, भूत्वा, दृष्टे, वक्षसि, आयुष:, आत्मन:, कर्तुम्, समाच्छन्नम्।

#### योग्यताविस्तारः

'पाठ का उड़िया मूल' श्री रमाकान्त रथ प्रणीत 'श्री राधा' पुस्तक से उद्भृत—

मुँ तमकु दिन दिन राति राति चाहिँ रहे किन्तु तमे जमा देखा दिअ नाहिँ।
मो चाहिँ रहिबा कण? नाना चंचलता
पूर्ण चाहिँ रहिबारे तमे पुरापूरि
रहिबाकु एते जागा काहिँ?
जेतेबेलेबा दिशुछ तम चेहेरार
अर्धाधिक रहे दृष्टि बहिर्भुत होइ,
याहा दिशे ताहा बि मो अशान्तिप्रसूत
नाना दृश्य नाना स्मृति नाना आकांक्षारे
आच्छादित होइ स्पष्ट देखायाए नाहिँ,

बा दिशुछि हलचल पाणिरे येपरि कूले थिबा गछंकर छाइ। गोटिए नाआँर रूप दिशिबा मात्र के अन्य एक नाआँ थिबा अन्य रूपटिए से जागारे दिशे एकमात्र रूप होइ। गोटिए रूपरकु मध्य आपणार करिबा भाजन एतेकाल धरि हेलि नाहिँ।

आउ केते काल बाकी अछि ये भाबिबि तमे याहा सेपरि भाबरे दिने आसि पहाँचिब मो परमायुर आउ केहि निथबा बेलरे?